

## डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 18, ओटी शैलियाँ

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

बाइबिल की व्याख्या में एक और महत्वपूर्ण पद्धति बाइबिल के पाठ पर साहित्य के प्रकार के दृष्टिकोण से विचार करना है। इसे शैली आलोचना, शैली, एक फ्रांसीसी शब्द के रूप में जाना जाता है जिसका अर्थ प्रकार या प्रकार होता है। इसलिए जब आप साहित्यिक और बाइबिल अध्ययन के संबंध में शैली के बारे में बात करते हैं, तो हम साहित्य के प्रकार के बारे में बात कर रहे हैं, जिस प्रकार के साहित्य के साथ हम काम कर रहे हैं, और यह मेरे पाठ को पढ़ने और व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है।

हम करते हैं, हम वास्तव में हर दिन शैली संबंधी निर्णय और पहचान करते हैं, हालांकि हम आमतौर पर इसे सहज और स्वाभाविक रूप से और अंतर्निहित रूप से करते हैं। हर बार जब आप अखबार उठाते हैं, तो आप स्वचालित रूप से एक शैली पहचान बनाते हैं कि आप किस प्रकार का साहित्य पढ़ रहे हैं और इस प्रकार, आप पाठ में क्या अपेक्षाएं लाते हैं। और यहां तक कि अगर आप एक अखबार पढ़ रहे हैं, तो आप पन्ने पलटते समय शैली में बदलाव करते हैं, क्योंकि उम्मीद है कि आप जिस तरह से खेल अनुभाग पढ़ते हैं, उसी तरह आप कॉमिक अनुभाग नहीं पढ़ते हैं, या आप खेल अनुभाग नहीं पढ़ते हैं। उसी तरह जैसे आप अखबार का पहला पन्ना, या पीछे का विज्ञापन या ऐसा ही कुछ पढ़ते हैं।

इसलिए आप विभिन्न प्रकार के साहित्य की पहचान करने में अचेतन शैली में बदलाव करते हैं। जब आप, जब आप कोई पत्र उठाते हैं और पढ़ते या लिखते हैं, जब आप, यदि मैं एक शोध पत्र की ग्रेडिंग कर रहा होता हूं, तो मैं अंतर्निहित और सहज रूप से एक शैली की पहचान कर रहा होता हूं, और इससे एक उम्मीद पैदा होती है कि मुझे क्या मिलेगा और मैं उस पाठ को कैसे पढ़ूंगा। या यदि आप एक किताब उठाते हैं और वह शुरू हो जाती है, एक बहुत ही क्लासिक और सामान्य उदाहरण का उपयोग करने के लिए, जिसे आमतौर पर चित्रण शैली के रूप में जाना जाता है, अगर मैं एक किताब उठाता हूं और वह शुरू होती है, एक समय की बात है, मुझे

पता चलता है कि मैं किस तरह की शैली हूँ पढ़ रहा हूँ, और मुझे पता है कि मुझे क्या उम्मीद करनी है, कि मैं बेसबॉल खेल या फुटबॉल खेल के स्कोर खोजने की उम्मीद नहीं करूँगा।

मैं किसी निश्चित जीवन, किसी निश्चित सभ्यता के उदय के ऐतिहासिक विवरण की अपेक्षा नहीं कर रहा हूँ। मैं वह पढ़ रहा हूँ जिसे परी कथा कहा जाता है, और इसमें जीवन की जो भी मूल्यवान अंतर्दृष्टि हो सकती है, मैं इसे इस तथ्य के संदर्भ में पढ़ने जा रहा हूँ कि यह व्यक्तियों और घटनाओं का वास्तविक ऐतिहासिक विवरण नहीं है। अंतरिक्ष और समय के इतिहास में स्थान। शैली की आलोचना कई मायनों में समझने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि अक्सर सही प्रकार की साहित्यिक शैली को समझने में विफलता के परिणामस्वरूप गलत संचार या गलत व्याख्या हो सकती है।

एक उदाहरण जो मैं देना चाहता हूँ, वह यह है कि जब हम स्कॉटलैंड में रहते थे, तो मुझे क्रिकेट के खेल को समझने में सबसे कठिन समय लगा, और इसका कारण यह था कि मैं इसे परंपराओं के अनुसार और उसके अनुसार समझने की कोशिश करता रहा। अमेरिकी बेसबॉल के नियम बार-बार, मुझे यह पता लगाने में कठिनाई हो रही थी कि क्या हो रहा था क्योंकि मैं अमेरिकी बेसबॉल के खेल की अपनी समझ से आगे नहीं बढ़ पा रहा था। साहित्य को समझने का भी यही हाल है।

दो रूपक जिनका अक्सर उपयोग किया जाता रहा है, चाहे वे कितने भी अपूर्ण क्यों न हों, लेकिन दो रूपक जिनका उपयोग अक्सर शैली को समझने के लिए किया जाता है, एक शैली है, एक साहित्यिक शैली है, जिसकी तुलना अक्सर एक खेल से की जाती है। लेखक और पाठकों से नियमों के अनुसार चलने की अपेक्षा की जाती है। शैली एक खेल की तरह है, एक साहित्यिक शैली काफी हद तक एक खेल की तरह है, जहां कुछ नियम होते हैं जिनका पालन लेखक पाठ बनाते समय करता है और पाठक पाठ को पढ़ने और उसकी व्याख्या करने में पालन करते हैं।

फिर, क्रिकेट के ब्रिटिश खेल के साथ मेरी कठिनाई की तरह, पाठ को समझने के लिए गलत नियमों को लागू करने से अक्सर गलतफहमी पैदा होगी। तो शैली के नियम उसी तरह जैसे नियम

यह निर्धारित करते हैं कि कोई खेल कैसे खेला जाता है, जब साहित्यिक शैली की बात आती है, तो किसी को पढ़ने के लिए, लिखने के साथ-साथ बाइबिल के पाठ को पढ़ने के लिए भी उचित नियम या दिशानिर्देश लागू करने चाहिए। इसके प्रकाश में, लेखक द्वारा पाठ तैयार करने और पाठकों द्वारा उसे समझने और पढ़ने दोनों का संदर्भ एक अनुबंध का दूसरा रूपक है।

यानी लेखक, लेखक और पाठक दोनों एक समझौता करते हैं। लेखक एक प्रकार का पाठ तैयार करने में कुछ परंपराओं का पालन करेगा और पाठक पाठ को समझने और व्याख्या करने के प्रयास में उनका पालन करेगा। अतः साहित्यिक विधा पढ़ने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करती है।

यह पाठ के अर्थ और पाठ के भाव का हिस्सा है, पाठ का भाव कुछ मायनों में इस बात से निर्धारित होता है कि पाठ कैसे संचार करता है। साहित्यिक शैली का संबंध इस बात से है कि पाठ किस प्रकार संचार करता है और एक अर्थ में वही प्रश्न साहित्यिक विधाओं से पूछे जाते हैं। याद रखें कि हमने आलोचना के स्वरूप, उसकी संरचना, शैली, इरादे के बारे में बात की थी।

इस प्रकार के प्रश्न अब संपूर्ण पाठ से, एक साहित्यिक शैली के रूप में, संपूर्ण पाठ से पूछे जाते हैं। प्राथमिक कठिनाई, जैसा कि हम देखेंगे, यह है कि प्राचीन सभ्यताओं, प्राचीन विश्व में साहित्यिक शैलियाँ हो सकती हैं जो हमारी विधाओं से बहुत भिन्न हों। दूसरे शब्दों में, जिन साहित्यिक विधाओं का हम सहजता से उपयोग करते हैं, हमें इस बारे में अधिक सचेत होना होगा कि हम उन शैलियों को कैसे समझते हैं जो हमारे समय में मौजूद नहीं हैं या उन साहित्यिक शैलियों से बहुत अलग हैं जिनके साथ हम काम करते हैं।

एक साहित्यिक शैली को कार्यों के एक समूह के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो रूप, सामग्री और कार्य की आवर्ती विशेषताओं को साझा करता है। अर्थात्, एक साहित्यिक शैली एक ऐसा कार्य है जिसे हम अन्य कार्यों के साथ समान विशेषताओं को साझा करने के रूप में पहचान सकते हैं और वे विशेषताएँ कार्यों का समूह हैं जो समान रूप और आकार, समान सामग्री साझा करते हैं, और जो समान कार्य करते हैं। लेकिन यह पहचानना भी महत्वपूर्ण है कि साहित्यिक

शैली केवल एक वर्गीकरण उपकरण नहीं है, बल्कि यह एक अनुमानी उपकरण के रूप में जाना जाता है।

अर्थात् यह व्याख्या में उपयोगी है। यह समझने के अलावा कि इसे पढ़ने और इसकी व्याख्या करने में क्या अंतर है, किसी साहित्यिक कृति को केवल वर्गीकृत करना अच्छा नहीं है। एक उदाहरण जो मैं अपनी कुछ कक्षाओं में उपयोग करना पसंद करता हूँ वह एक कॉमिक या कार्टून है जो किसी को अखबार में मिलता है और मैं उनसे पूछता हूँ, उदाहरण के लिए, इसकी कुछ विशेषताएं क्या हैं, औपचारिक विशेषताएं क्या हैं? इसका कौन सा रूप आपको बताता है कि यह एक हास्य है? उदाहरण के लिए, तथ्य यह है कि फ्रेम की एक श्रृंखला है।

यह कोई चलन नहीं है, यह कोई दौड़ नहीं है, मुझे लगता है कि कुछ कॉमिक्स कैप्शन के साथ एक एकल चित्र हैं, लेकिन अधिकांश कॉमिक्स फ्रेमों की एक श्रृंखला में हैं। वे अतिशयोक्तिपूर्ण हैं और कभी-कभी विशेषताएं मनुष्यों या अन्य जानवरों या उस जैसी चीजों के व्यंग्यचित्र हैं। और फिर दूसरी विशेषता यह है कि फ्रेम के भीतर आमतौर पर एक बुलबुला होता है जिसमें कॉमिक के भीतर विभिन्न व्यक्तियों के भाषण होते हैं।

और आमतौर पर, फिर से, अधिकांश छात्रों को रुकना पड़ता है और थोड़ा सोचना पड़ता है, लेकिन वे वास्तव में एक कॉमिक की पहचान कर सकते हैं। वे आमतौर पर ऐसा सहज रूप से करते हैं। और उन्हें यह भी एहसास है कि जब कोई कॉमिक पढ़ता है, तो जरूरी नहीं कि वह वास्तव में घटित किसी घटना को चित्रित कर रहा हो, हालांकि एक राजनीतिक कार्टून ऐसा कर सकता है।

लेकिन यह राजनीतिक दुनिया में वास्तविक घटनाओं या स्थितियों या वास्तविकताओं को अतिरंजित, लगभग प्रतीकात्मक और रूपक तरीकों से चित्रित करता है। लेकिन कोई कॉमिक पढ़ता है और महसूस करता है कि वे अक्सर एक टिप्पणी प्रदान करने के लिए कार्य करते हैं, वे आवश्यक रूप से वास्तविक शाब्दिक व्यक्तियों और घटनाओं का जिक्र नहीं कर रहे हैं, लेकिन वे वास्तविकता, समाज और जीवन पर एक टिप्पणी प्रदान करने के लिए कार्य कर सकते हैं।

लेकिन वे ऐसा इस तरह से करते हैं जिससे हास्य उत्पन्न होता है और कभी-कभी समाज में कुछ सम्मेलनों पर व्यंग्य भी किया जाता है।

इसलिए किसी कार्टून पर थोड़ा सा प्रतिबिंबित करके, आम तौर पर छात्र उन कारणों की पहचान कर सकते हैं जिनके कारण वे इसे कार्टून के रूप में वर्गीकृत करते हैं और यह इसे पढ़ने और इसकी व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है ताकि यह प्रदर्शित हो सके कि हम हर दिन शैली की पहचान करते हैं। फिर, कठिनाई प्राचीन शैलियों और साहित्यिक शैली की प्राचीन परंपराओं को पहचानने और उनका उपयोग करने में है, व्यक्ति को अधिक जानबूझकर होना होगा। किसी को अधिक स्पष्ट पहचान बनानी होगी, जो, जैसा कि मैंने कहा, तब और अधिक कठिन हो जाता है जब आप किसी प्राचीन संस्कृति की शैलियों से निपट रहे हों जो आज हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले साहित्यिक प्रकारों के अनुरूप हो भी सकती हैं और नहीं भी।

विधाओं, साहित्यिक विधाओं को भी क्षैतिज एवं ऊर्ध्वाधर दोनों प्रकार से समझा जाना चाहिए। अर्थात्, क्षैतिज रूप से, बाइबिल के पाठ को अपनी तरह के अन्य साहित्यिक प्रकारों और शैलियों से संबंधित के रूप में पढ़ा जा सकता है। यानी, फिर से, एक साहित्यिक शैली लेखन का एक समूह है जिसमें रूप, सामग्री और कार्य की समान आवर्ती विशेषताएं होती हैं।

तो लंबवत रूप से, एक दिया गया बाइबिल पाठ लेखन की उस श्रेणी में फिट बैठता है जिससे वह संबंधित है, जिसके अनुरूप होगा। लेकिन किसी को साहित्यिक प्रकार को क्षैतिज रूप से भी पढ़ना चाहिए, यानी अपने तर्क और अपनी संरचना का पालन करते हुए। इसका मतलब यह है कि साहित्यिक विधा हमेशा सभी व्याख्यात्मक कठिनाइयों का समाधान नहीं करती है।

मेरी राय में, शैली का प्राथमिक कार्य हमें व्याख्या में सही कदम उठाने में मदद करना है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम सही शुरुआत कर रहे हैं, यह पाठ में प्रवेश बिंदु है। लेकिन कभी-कभी पाठ का अपना तर्क और संरचना होती है, और कभी-कभी इसकी अपनी अनूठी विशेषताएं होती हैं जिनके लिए व्याख्या की आवश्यकता होती है और इस समझ की आवश्यकता होती है कि शैली के लिए अपील व्याख्या की हर आखिरी समस्या का समाधान नहीं करेगी।

फिर, एक उदाहरण यह है कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक की साहित्यिक शैली को वर्गीकृत करने से सहस्राब्दी की समस्या का समाधान नहीं होता है। यह उस पाठ के प्रति कुछ दृष्टिकोणों को खारिज कर सकता है, लेकिन यह अंततः यह हल नहीं करता है कि कोई उस पाठ को कैसे पढ़ेगा। ऐसे अन्य कारक भी हैं जिन पर विचार किया जाता है।

साहित्यिक आलोचक ईडी हिर्श ने इसे बाहरी शैली और आंतरिक शैली के रूप में संदर्भित किया है, यानी, साहित्यिक वर्गीकरण जिसके अंतर्गत एक पुस्तक आती है, यानी, अन्य कार्य जो इसके समान होते हैं, और फिर आंतरिक शैली, कार्य का अपना तर्क और संरचना और कैसे यह हमारे पढ़ने के तरीके को प्रभावित करता है। मैं जो करना चाहता हूँ वह पुराने नए नियम की कुछ साहित्यिक शैली और साहित्यिक प्रकारों की संक्षेप में जांच करना है, विशेष रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करना कि इसकी व्याख्या करने में कैसे अंतर आ सकता है। पुराने नियम में, हम बहुत संक्षेप में कविता, कानून और भविष्यवाणी पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

हम पहले ही कथा के बारे में बात कर चुके हैं जहाँ तक कथा कथानक और संरचना और चरित्र-चित्रण की कुछ परंपराएँ हैं। मैं कथा-साहित्य पर बहुत अधिक समय नहीं खर्च करूँगा। मैं नए नियम में गॉस्पेल के संबंध में कुछ अतिरिक्त टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ, लेकिन हम पुराने नियम में कविता, कानून और भविष्यवाणी को देखेंगे।

न्यू टेस्टामेंट में, मैं गॉस्पेल शैली, गॉस्पेल की शैली, मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करूँगा, लेकिन फिर मैं पत्रों और फिर न्यू टेस्टामेंट की आखिरी किताब पर ध्यान केंद्रित करूँगा। बाइबिल, रहस्योद्घाटन की पुस्तक, और फिर से शैली और कुछ प्रमुख व्यापक सम्मेलनों और शायद व्याख्या के लिए कुछ संक्षिप्त दिशानिर्देशों पर ध्यान केंद्रित करना। पुराने नियम में पहली बात जिसके बारे में मैं बात करना चाहता हूँ वह कविता है, और वास्तव में इसे फिल्माने वाला व्यक्ति यहां खड़े होने के लिए मुझसे कहीं अधिक योग्य है। हो सकता है कि मुझे उसके साथ स्थान बदल लेना चाहिए, लेकिन मैं जो करना चाहता हूँ वह केवल मेरी अपनी व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि को संक्षेप में प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि कविता की कुछ प्रमुख विशेषताओं

को और अधिक संक्षेप में प्रस्तुत करना है जिन पर अन्य कार्य ध्यान केंद्रित करते हैं, और फिर हम कानून की ओर बढ़ेंगे। इसके बाद।

कविता, कविता के अधिकांश उपचार, जैसा कि मैं इसे समझता हूँ, दो विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करता है, फिर से मेरे पास केवल संक्षेप में, दर्दनाक रूप से, दर्दनाक रूप से संक्षिप्त तरीके से छूने का समय है, और वह दो महत्वपूर्ण परंपराएं हैं, समानता का उपयोग और उपयोग भाषण के अलंकारों का। समांतरता केवल कविता की एक विशेषता है, हिब्रू कविता, जहां कविता में पंक्तियां एक-दूसरे के साथ संबंध में खड़ी होती हैं, और यहां तक कि अधिकांश अंग्रेजी अनुवाद, यदि आप भजन या नीतिवचन या अन्य काव्य साहित्य पढ़ते हैं, तो कविता को प्रस्तुत करेंगे और इसे एक रूप में संरचित करेंगे। वह तरीका जो समानता दिखाता है, वह है दो, आमतौर पर दो रेखाएं, आमतौर पर, समानांतर फैशन में एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं, और दूसरी पंक्ति किसी तरह से आम तौर पर पहली पंक्ति को परिभाषित या विस्तारित करती है या विकसित करती है। हम इसे, उदाहरण के लिए, नीतिवचन अध्याय 9 और श्लोक 10 में, इसका केवल एक उदाहरण देने के लिए, बहुत अधिक देर तक रुके बिना, देखते हैं, और इसके सभी प्रकार के उदाहरण हैं, अध्याय 9 और श्लोक 10, भय प्रभु का, नीतिवचन में अधिक प्रसिद्ध कथनों में से एक, प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है, और पवित्र का ज्ञान समझ है, और ध्यान दें कि दो पंक्तियाँ समानांतर फैशन में खड़ी हैं, दूसरी पंक्ति किसी तरह से पहली पंक्ति को विकसित करना या विस्तारित करना या खोलना, जिससे यह जुड़ा हुआ है।

तो कविता पढ़ते समय जिन चीजों से निपटना पड़ता है उनमें से एक, विशेष रूप से हममें से वे जो कविता से परिचित हैं जो मुख्य रूप से पंक्तियों के अंत में ध्वनि की लय और तुकबंदी ध्वनियों के साथ संचालित होती है या ऐसा ही कुछ, शायद कुछ और भी रहा हो जो काम किया गया है, उसके बारे में मुझे जानकारी नहीं है, लेकिन जहां तक मुझे पता है, हिब्रू समानता जहां तक छंदबद्ध ध्वनियों या ध्वनियों के समानांतर काम नहीं करती है। हालाँकि, जैसा कि हमने कहा है, कभी-कभी, कविता के समय में एक विशेषता यह होती है कि अन्य संरचनात्मक विशेषताएँ भी हो सकती हैं, जैसे कि कभी-कभी कुछ छंद हिब्रू वर्णमाला के पहले अक्षर से शुरू होते हैं जो आपको संपूर्ण हिब्रू वर्णमाला के माध्यम से ले जाते हैं, कुछ ऐसा जो स्पष्ट रूप से चल रहा है

अंग्रेजी अनुवाद में खो जाना. लेकिन पहली चीज़ जिसके बारे में आपको जागरूक होने की ज़रूरत है वह है समानता की विशेषता, और सबसे अच्छी बात जो मैं सोचता हूँ, सबसे अच्छी सलाह जो मैं दे सकता हूँ वह है किसी ऐसे व्यक्ति से बात करना जो हिब्रू कविता का विशेषज्ञ है या एडेला जैसे व्यक्तियों के कार्यों को पढ़ता है। बर्लिन या रॉबर्ट ऑल्टर, और कुछ व्याख्यात्मक ग्रंथ कभी-कभी आपको कविता में हिब्रू समानता से परिचित कराने का बहुत अच्छा काम करते हैं।

लेकिन फिर, जिस तरह से इसे अक्सर संरचित किया जाता है वह दो पंक्तियों के अनुसार होता है जो एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं, पहली पंक्ति कई तरीकों से होती है, और कभी-कभी विद्वानों ने विभिन्न लेबलों में एंटीथेटिक समानता या पर्यायवाची समानता जैसी श्रेणियां बनाई हैं, हालांकि अन्य लोगों ने उन पर सवाल उठाया है या नहीं वे वैध श्रेणियां हैं या नहीं। लेकिन मुख्य बात यह है कि समानता और इसके काम करने के तरीके से परिचित होना, कैसे एक रेखा अपने से पहले आने वाली रेखा को विस्तारित करने या प्रभावित करने या किसी तरह से समझाने का काम करती है। कविता की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता, हिब्रू कविता, चाहे वह स्तोत्र में हो या नीतिवचन में, विशेष रूप से स्तोत्र में, यहां तक कि भविष्यसूचक साहित्य भी अक्सर काव्यात्मक रूप में ढाला जाता है।

अन्य विशेषता भाषण के अलंकार हैं, और मुख्य रूप से जिसे अक्सर उपमा या रूपक के रूप में लेबल किया जाता है, कुछ को कुछ और जैसा कहा जाता है या बस कुछ कुछ और होता है। उदाहरण के लिए, जब ईश्वर को चट्टान या किले या मीनार के रूप में संदर्भित किया जाता है, या भजन 119 छंद 105 में, एक उत्कृष्ट उदाहरण, आपका शब्द मेरे चरणों के लिए एक दीपक है, शब्द की तुलना किसी तरह से दीपक से की जाती है। या दूसरा उदाहरण, पहले स्तोत्र को देखें, जिसकी शुरुआत तुरंत रूपक और भाषण के अलंकारों के माध्यम से संचार से होती है।

तो भजन 1 शुरू होता है, धन्य वह मनुष्य है जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, या पापियों के मार्ग में खड़ा नहीं होता, या ठट्टों में नहीं बैठता, परन्तु वह प्रभु की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है, और उसकी व्यवस्था पर ध्यान करता है। दिन और रात। वह जल की धाराओं के किनारे लगाए गए



उस वृक्ष के समान है, जो ऋतु में फल देता है, और उसकी पत्तियाँ सूखती नहीं, जो कुछ वह करता है वह सफल होता है, दुष्टों के समान नहीं, वे भूसी के समान हैं जो हवा से उड़ जाती है। और मैं वहां पढ़ना बंद कर दूंगा, लेकिन ध्यान दें कि कैसे भजनहार पहले से ही आलंकारिक भाषण की परंपरा का उपयोग करता है, विशेष रूप से रूपक या जिसे कभी-कभी उपमा भी कहा जाता है।

इससे क्या पता चलता है, मूल रूप से रूपक क्या है या भाषण के अलंकारों में क्या शामिल है, यह दो चीजों का मेल है जो आमतौर पर एक साथ नहीं होते हैं, जैसे कि एक आदमी या एक व्यक्ति को पेड़ के संदर्भ में समझाना। इस तरह से दो चीजें जो एक साथ नहीं चलतीं, उन्हें आपस में जोड़कर एक असंगति पैदा की जाती है। तो फिर कोई यह पूछता है कि जिस अर्थ को संप्रेषित करने का प्रयास किया जा रहा है उस अर्थ पर यह तुलना क्या प्रकाश डालती है? तो फिर, जब लेखक ईश्वर की तुलना चट्टान से करता है, या जब धर्मी की तुलना उस पेड़ से करता है जो फल देता है और उसकी पत्तियाँ मुरझाती नहीं हैं, तो दो चीजों के इस मेल से क्या पता चलता है जो आम तौर पर एक साथ नहीं होते हैं और आमतौर पर एक साथ होते हैं एक साथ नहीं जाना ? या उदाहरण के लिए, भजन अध्याय 57 और पद 4। भजन अध्याय 57 और पद 4, लेखक कहता है, मैं सिंहों के बीच में हूँ, मैं हिंसक जानवरों के बीच में पड़ा हूँ।

अब, अगर मैं वहां रुकूं, तो क्या यह लेखक कहीं जंगल में है? या वह चिड़ियाघर में है? या कहां क्या हो रहा है? परन्तु तुम आगे बढ़ो और यह कहता है, ऐसे मनुष्य जिनके दाँत भाले और तीर हैं, जिनकी जीभ तेज़ तलवारें हैं। इसलिए उन भौतिक जानवरों का जिक्र करने के बजाय, जिनके बीच वह खुद को पाता है, वह अपने दुश्मनों का वर्णन करता हुआ प्रतीत होता है। और इसलिए कोई यह पूछ सकता है कि लेखक के मानवीय शत्रुओं को जानवरों और जंगली जानवरों और जानवरों से तुलना करने का क्या प्रभाव पड़ता है? प्रभाव क्या है? दो चीजों को एक साथ रखकर कौन से अर्थ या अर्थ संप्रेषित किए जाते हैं जिनका आमतौर पर कोई संबंध नहीं होता? ओह, इसके बारे में कहने के लिए तीन बातें हैं।

नंबर एक, समस्या यह है कि अक्सर बाइबिल के लेखक ऐसे रूपकों का उपयोग कर सकते हैं जो हमारे लिए अपरिचित हैं और जिनका उपयोग हम अपने आधुनिक समाज में नहीं करते हैं। इसलिए एक बार फिर, रूपक की ताकत को समझने के लिए पाठ को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखने की कोशिश करना आवश्यक है। दूसरा, रूपक हैं, और आलंकारिक भाषण अपनी भावनात्मक अपील के साथ-साथ अपनी बौद्धिक अपील के लिए भी महत्वपूर्ण है।

अक्सर हम रूपकों को देखते हैं, विशेष रूप से कभी-कभी मुझे लगता है कि इंजीलवादी, व्याख्याकार इसके लिए विशेष रूप से दोषी हैं, वे रूपकों को केवल कुछ धार्मिक प्रस्तावात्मक सत्य के कंटेनर के रूप में देखते हैं, बिना यह पहचाने कि रूपक अपनी भावनात्मक अपील के लिए उतना ही है जितना कि यह इसकी बौद्धिक, बौद्धिकता है। इसका पहलू उदाहरण के लिए, जब भजनहार अपने पाठकों की तुलना जंगली जानवरों से करता है जो उसे घेर रहे हैं और उसे निगलने के लिए तैयार हैं, तो निश्चित रूप से पाठक पर इसका प्रभाव पड़ता है जो कि मेरे दुश्मनों पर हमला करने के लिए तैयार हैं या ऐसा कुछ करने के अधिक नग्न वर्णन से कहीं अधिक है। इसलिए रूपक उनकी भावनात्मक अपील के लिए महत्वपूर्ण हैं।

दूसरा, रूपक पाठक की भागीदारी को आमंत्रित करते हैं। मुझे लगता है कि रूपक और आलंकारिक भाषण के प्रभावों में से एक, क्या यह पाठक की भागीदारी, सक्रिय भागीदारी को आमंत्रित करता है ताकि वह कल्पनाशील रूप से इस रूपक से पूछ सके कि तुलना का प्राथमिक बिंदु क्या है? इन दो चीजों को एक साथ रखने का क्या प्रभाव है जो आमतौर पर संबंधित नहीं होती हैं? रूपक संभावित कनेक्शनों की एक श्रृंखला खोलता है जिसे पाठक को तलाशने के लिए आमंत्रित किया जाता है। लेकिन अंतिम बात, रूपक के बारे में अंतिम बात यह है कि दुर्भाग्य से, अक्सर अंग्रेजी अनुवाद रूपक की पूरी ताकत को पकड़ने में असमर्थ होते हैं, खासकर यदि आपके पास रूपक है।

कठिनाइयों में से एक, फिर से, अगर मेरे पास बाइबिल के पाठ में एक रूपक है जो समझ में नहीं आता है या आधुनिक अनुवाद में रिसेप्टर भाषा में मौजूद नहीं है, तो यह एक कठिनाई पैदा करता है। क्या मैं कोई भिन्न रूपक चुनूँ? क्या मैं इसे समझाऊँ, जिससे महत्वपूर्ण विशेषताएं खो जाएंगी?

क्या मैं, क्या होगा यदि रूपक, विशेष रूप से यदि रूपक पाठक को संभावित कनेक्शन का पता लगाने के लिए आमंत्रित करने के लिए हैं, तो बस रूपक को समझाने से उन चीजों की संख्या सीमित हो सकती है जो वह कर सकता है। तो मैं इसे वहीं छोड़ दूँगा।

लेकिन जैसा कि मैंने कहा, कविता के साथ, दो चीजों से, कम से कम एक को निपटना होगा, वह है समानता, जिसे आमतौर पर काव्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में पहचाना जाता है, हिब्रू समानता, और फिर भाषण के अलंकारों, रूपकों और उपमाओं का उपयोग और उस तरह की चीजें। पुराने नियम में दूसरा साहित्यिक प्रकार जिसके बारे में मैं संक्षेप में बात करना चाहता हूँ, वह है कानून या इज़राइल के कानूनी साहित्य की कानूनी भाषा। पहली बात, कानून या कानूनी साहित्य के बारे में जो महत्वपूर्ण बात मुझे समझ में आती है, वह यह है कि इसे ईश्वर के लोगों के जीवन के निर्देश और नियमन के संदर्भ में समझा जाना चाहिए, जो कि उन्होंने अपने लोगों के साथ किया है। .

दूसरे शब्दों में, कानून सामग्री, पुराने नियम में कानूनी सामग्री एक अनुबंधित भगवान की व्यक्तिगत मांगों हैं जिन्होंने दयालुतापूर्वक अपने लोगों के साथ एक रिश्ते में प्रवेश किया है। दूसरे शब्दों में, अधिकांश आधुनिक व्याख्याकारों के लिए पहली बात, विशेष रूप से हममें से कुछ, जिनके पास नहीं है, जो कानूनी साहित्य में पहली बार आ रहे हैं, पुराने नियम में कानून सामग्री, यह महसूस करना है केवल एक ही नहीं, जिसे हममें से कुछ लोग नियमों या शर्तों या, या, या पाठकों पर मनमाने ढंग से रखी गई कानूनी मांगों की सूची के रूप में सोच सकते हैं। लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि साहित्य ईश्वर के उस अनुबंधित रिश्ते से विकसित होता है, जिसमें वह अपने लोगों के साथ प्रवेश करता है।

विद्वानों ने कम से कम दो प्रकार के कानून की पहचान की है। और भी बहुत सी बातें हैं जो कही जा सकती हैं। और फिर, सबसे अच्छी चीजों में से एक जो आप कर सकते हैं वह उन कार्यों को पढ़ना होगा जो विभिन्न प्रकार के कानून और वे कैसे कार्य करते हैं, विशेष रूप से भगवान के लोगों, इज़राइल के जीवन में चर्चा करते हैं।

एक प्रकार के कानून को अक्सर आकस्मिक कानून के रूप में जाना जाता है, और यह मूल रूप से यदि-तब संरचना का अनुसरण करता है। वह यह है कि यदि भाग परिस्थितियों या मुद्दे या मामले को निर्धारित करता है। और फिर उस मामले का कानूनी उपचार, द, द, पेनल्टी या, या परिणाम या, या, द, है।

तो यदि ऐसा होता है, तो आपको यही करना है। इसका एक उदाहरण निर्गमन अध्याय 21 में पाया जाता है। फिर, ऐसे कई उदाहरण हैं जिनकी ओर हम इशारा कर सकते हैं, लेकिन मैं बस, मैं शुरुआत के करीब से शुरू करूँगा।

अध्याय 20 10 आज्ञाओं का वर्णन है, और हम इसका उपयोग दूसरे प्रकार के कानून को चित्रित करने के लिए करेंगे। लेकिन अध्याय 21, यहां एक उदाहरण है, पद दो, यदि आप एक हिब्रू नौकर खरीदते हैं, तो उसे छह साल तक आपकी सेवा करनी होगी, लेकिन सातवें वर्ष में, वह बिना कुछ भुगतान किए मुक्त हो जाएगा। तो यदि भाग, यदि आप एक हिब्रू नौकर खरीदते हैं तो यह मामला या मुद्दा है, और फिर इसका बाकी हिस्सा यह है कि इस मामले से कैसे निपटा जाना है और कानूनी रूप से इसका इलाज कैसे किया जाना है।

या फिर, श्लोक, श्लोक 18 और 19, यदि पुरुष झगड़ते हैं और एक दूसरे को पत्थर से या मुक्के से मारता है, और वह मरता नहीं है, लेकिन अपने बिस्तर तक ही सीमित रहता है, तो यह मामले का हिस्सा है, तो एक 19 में, इसलिए, कानूनी, कानूनी दंड या, या मामले का इलाज कैसे किया जाना है। श्लोक 19, तो जिसने मारा वह जिम्मेदार नहीं होगा यदि दूसरा उठकर अपनी लाठी के साथ बाहर घूमता है। हालाँकि, उसे घायल व्यक्ति को उसके समय की हानि के लिए भुगतान करना होगा और यह देखना होगा कि वह पूरी तरह से ठीक हो गया है।

और फिर, एक संख्या है, विशेष रूप से निर्गमन 21, आप अध्याय के माध्यम से पढ़ सकते हैं, और उस प्रकार की कई संख्याएं हैं जिन्हें विद्वान कैसुइस्टिक कानून कहते हैं, जिसके साथ वे संरचना बनाते हैं। दूसरे प्रकार का कानून जिस पर विद्वान अक्सर पुराने नियम के विद्वानों का

ध्यान आकर्षित करते हैं, उसे एपोडिक्टिक कानून कहा जाता है, जो अधिक स्पष्ट आदेश हैं। बस, आप ये करोगे।

इसका एक अच्छा उदाहरण निर्गमन अध्याय 20 में 10 आज्ञाएँ, डेकालॉग है। इसलिए आपके सामने कोई अन्य देवता नहीं होगा। तुम अपने लिये कोई मूर्ति न बनाना।

आप भगवान के नाम का दुरुपयोग नहीं करेंगे। तुम सब्त के दिन को स्मरण रखो, और उसे पवित्र मानो। तुम हत्या नहीं करोगे।

व्यभिचार प्रतिबद्ध है। तुम चोरी नहीं करोगे। तो 10 आज्ञाएँ एपोडिक्टिक कानून का एक उदाहरण हैं, बस श्रेणीबद्ध आदेश।

तो इसके प्रकाश में, शायद इससे अधिक रुचि की बात यह है कि हम पुराने नियम की कानूनी सामग्री की व्याख्या कैसे करते हैं, विशेष रूप से यह आज के ईसाइयों पर, भगवान के लोगों पर कैसे लागू होती है? और फिर, मैं जो करना चाहता हूँ वह कम से कम कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करना है। अभी बहुत कुछ कहा जाना बाकी है और मैं केवल इन सिद्धांतों का संक्षेप में वर्णन कर सकता हूँ। लेकिन सबसे पहले, मुझे लगता है कि कानून को समझने के लिए पहली महत्वपूर्ण विशेषता साहित्य के किसी भी अन्य भाग की तरह, कानून देने के संदर्भ को समझना है, विशेष रूप से निर्गमन अध्याय 20 और छंद 1 और 2। हम पहले ही कह चुके हैं कि हमें इसकी आवश्यकता है ईश्वर द्वारा अपने लोगों के साथ दयालुतापूर्वक अनुबंधित संबंध में प्रवेश करने के संदर्भ में कानून को समझें।

तो फिर कानून यह निर्धारित करता है कि उस अनुबंधित रिश्ते के भीतर भगवान अपने लोगों से क्या अपेक्षा करता है। इसलिए हमें कानून देने के संदर्भ को समझकर शुरुआत करने की जरूरत है। निर्गमन अध्याय 20 और पद 1 और 2, और परमेश्वर ने 10 आज्ञाओं के तथाकथित डिकालॉग देने से ठीक पहले निर्गमन 20 के पद 2 में ये सभी शब्द कहे थे।

वह कहता है, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुम्हें दासत्व के देश अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया। मैं सोचता हूं कि यह कानून देने के लिए संदर्भ प्रदान करता है जिसमें कानून इजरायल को मिस्र से अपने लोगों को छुड़ाने के ईश्वर के दयालु प्रावधान के जवाब में दिया गया था। अर्थात्, परमेश्वर के साथ इस रिश्ते को बनाए रखने के लिए कानून दिया गया था जिसने उन्हें मिस्र से छुड़ाकर छुटकारा दिलाया था और उन्हें आशीर्वाद दिया था।

अब कानून दिया गया है क्योंकि इज़राइल उस पर प्रतिक्रिया देगा और उसके प्रकाश में रहेगा। दूसरा, मुझे लगता है कि यह समझना महत्वपूर्ण है कि कानून को उसके मूल ऐतिहासिक संदर्भ के आलोक में उसी तरह से समझा जाए जैसे हम किसी अन्य साहित्य के साथ व्यवहार करते हैं। अर्थात् विभिन्न कानूनों की ऐतिहासिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझना।

उदाहरण के लिए, आपको केवल एक संक्षिप्त उदाहरण देने के लिए, लैव्यव्यवस्था 19, पद 27 और 28 में, मोज़ेक कानून टैटू को क्यों वर्जित करता है? यह दाढ़ी काटने और इस तरह की चीज़ों को क्यों मना करता है? तो अगर मैं कल उठूं और अपनी दाढ़ी काटूं या काटूं, तो क्या मैंने मोज़ेक कानून का उल्लंघन किया है? यदि आपके पास एक टैटू है, या कई टैटू हैं, तो क्या आपने मोज़ेक कानून का उल्लंघन किया है? किसी भी अन्य बाइबिल पाठ की तरह, कानूनों को उनकी ऐतिहासिक सांस्कृतिक सेटिंग के भीतर रखना महत्वपूर्ण है। इस पाठ की एक सामान्य व्याख्या यह है कि लैव्यिकस 19 जिस चीज़ की मनाही कर रहा है वह इज़राइल, भगवान के लोगों, का कुछ बुतपरस्त धार्मिक पुरोहिती प्रथाओं के साथ जुड़ाव है। इसलिए यह जरूरी है कि कानूनों को उनके मूल ऐतिहासिक सांस्कृतिक संदर्भ में रखकर पूछा जाए कि वे क्या कर रहे थे और उन्हें क्यों दिया गया।

एक तीसरा, फिर से बहुत जल्दी, एक तीसरा सिद्धांत है, विशेष रूप से अनुप्रयोग के संदर्भ में, मूल ऐतिहासिक सांस्कृतिक संदर्भ को समझना यह पूछना है कि फिर इस कानून का असली इरादा क्या प्रतीत होता है? ऐसा क्यों दिया हुआ प्रतीत होता है? वह प्राथमिक ड्राइविंग सिद्धांत क्या प्रतीत होता है जो इस कानून को जन्म देता है? उदाहरण के लिए, जैसा कि हमने कहा, लैव्यिकस अध्याय 19 में टैटू का उद्देश्य बुतपरस्त धार्मिक प्रथाओं से बचना हो सकता है। ताकि

आज, टैटू आमतौर पर बुतपरस्त धार्मिक पुरोहिती प्रथाओं से जुड़ा हुआ प्रतीत न हो। इसलिए कोई भी मोज़ेक कानून का उल्लंघन किए बिना टैटू बनवा सकता है।

इसलिए हमें अपने समाज और संस्कृति में अन्य तरीकों की तलाश करनी होगी जहां हमें इस आदेश के इरादे का उल्लंघन करने का खतरा हो सकता है, कि भगवान के लोग बुतपरस्त धार्मिक अनुष्ठानों और प्रथाओं के साथ जुड़ने और उनमें भाग लेने से बचें। या उदाहरण के लिए इज़राइल की कानूनी सामग्री, इज़राइल के जीवन में पाए जाने वाले एक और आदेश को लें, और वह यह है कि कुछ स्थानों पर इज़राइल को आदेश दिया गया है कि वे अपनी फसल को खेत के किनारे तक न काटें, बल्कि कुछ को छोड़ दें। यह खड़ा है। फिर, मुझे लगता है कि इसका असली इरादा यह है कि यह मूल रूप से इसराइल की कल्याण प्रणाली का हिस्सा था।

यह फसल के कुछ हिस्से को खड़े रहने देने का एक तरीका था ताकि गरीब लोग खेतों में बीनने आ सकें, उदाहरण के लिए, रूथ की किताब में आपको यही मिलता है। तो एक, इस्राएलियों को आदेश दिया गया था कि जिनके पास फसल थी वे उसमें से कुछ को गरीबों के समर्थन और प्रदान करने के तरीके के रूप में खड़े छोड़ दें। तो फिर, हमें आज के समय में यह पूछना होगा कि इस कानून के इरादे को देखते हुए, यह कैसा दिख सकता है? हमारे समय में, हम आम तौर पर किसी व्यक्ति को अपने खेतों से गुज़रने की अनुमति नहीं देते हैं।

यह गरीबों को खाना खिलाने का सामान्य या स्वीकार्य तरीका नहीं है। वे आम तौर पर किसानों के खेतों में नहीं जाते हैं, हालांकि ऐसा हो सकता है, लेकिन वे आमतौर पर खेतों में भोजन की तलाश या तलाश के लिए नहीं जाते हैं। अन्य स्थान भी हो सकते हैं जैसे भोजन भंडारगृह या ऐसा ही कुछ।

इसलिए हमें खुद से पूछना होगा कि आज हमें किस तरह से गरीबों की परवाह करनी चाहिए? भगवान के लोगों को चर्च के भीतर और साथ ही चर्च के बाहर भगवान के लोगों के गरीबों के लिए चिंता किस तरह प्रदर्शित करनी चाहिए? फिर, आमतौर पर यह लोगों को हमारे खेतों में बीनने की अनुमति देने से नहीं होगा, खासकर यदि आप किसान या पशुपालक नहीं हैं या यदि आप

ऐसी फसल नहीं उगाते हैं जो खाने योग्य और मानव उपभोग के लिए उपयुक्त हो। तो फिर, मैं इस आदेश को देखता हूँ और पूछता हूँ कि असली इरादा क्या प्रतीत होता है? इस आदेश का उद्देश्य क्या प्रतीत होता है? यह क्या संचार करने का प्रयास कर रहा है? और फिर यह पूछना कि मेरे समकालीन समाज में यह कैसा दिखेगा? मैं अपने दिन, उम्र और संस्कृति में उस सच्चे इरादे को कैसे पूरा कर सकता हूँ? एक अंतिम, फिर से, जिसे मैं केवल बहुत संक्षेप में बता सका, मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है, और यह पुराने और नए टेस्टामेंट के बीच संबंधों की मेरी समझ पर प्रभाव डालता है, कि अंततः ओल्ड टेस्टामेंट को अपना चरमोत्कर्ष और पूर्णता मिलती है। नया नियम और नई वाचा में यीशु मसीह के व्यक्तित्व में रहस्योद्घाटन। तो अंततः, मुझे लगता है कि किसी भी पाठ की व्याख्या यह पूछकर समाप्त होनी चाहिए कि यह पुराने और नए टेस्टामेंट केनन के संपूर्ण संदर्भ के साथ खुद को कैसे पाता है, जो कि जैसा है, दो टेस्टामेंट, पुराने और नए टेस्टामेंट को मोचन में रखता है। धार्मिक संबंध.

तो फिर इसका मतलब नंबर चार है, आखिरकार, किसी को यह भी समझने की जरूरत है कि यीशु मसीह के व्यक्तित्व की पूर्ति के प्रकाश में कानून आज हम पर कैसे लागू होता है। अब यह कभी-कभी बहुत कठिन होता है, और मेरे पास इससे संबंधित कुछ प्रश्नों पर जाने का समय नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि कानून भगवान के लोगों पर कैसे लागू होता है, यह समझने के लिए मैथ्यू अध्याय 5 और पद 17 प्रमुख ग्रंथों में से एक है।, जहाँ यीशु कहते हैं, मैं व्यवस्था को रद्द करने नहीं आया हूँ। यह पर्वत पर उपदेश की शुरुआत में ही है।

यीशु कहते हैं, मैं व्यवस्था को रद्द करने नहीं, परन्तु उसे पूरा करने आया हूँ। मुझे लगता है कि कानून को पूरा करने से यीशु का क्या मतलब है, मुख्य रूप से यह नहीं है कि वह इसका पालन करने आया है, हालांकि वास्तव में वह ऐसा करता है, बल्कि उस शब्द की पूर्ति को इस प्रकाश में समझने की जरूरत है कि मैथ्यू ने पिछले अध्यायों में पूर्ति का उपयोग कैसे किया है, जहां अक्सर वह यह प्रदर्शित करने के लिए पूर्ति का उपयोग करता है कि कैसे यीशु का जीवन और उसकी शिक्षा पुराने नियम में कुछ को पूरा करती है या पूरा करती है। यीशु का जीवन, उनका व्यक्तित्व, उनकी शिक्षा वह लक्ष्य है जिसकी ओर पुराना नियम इंगित कर रहा था, कि लक्ष्य अंततः आ गया है, फिर यीशु को इसे पूरा करते या पूरा करते हुए देखा जा सकता है।



इसलिए, जब मैं इसे लेता हूँ, जब यीशु मैथ्यू 5, 17 में कहते हैं, मैं कानून को खत्म करने के लिए नहीं आया हूँ, मैं पूर्ति के लिए आया हूँ, मुख्य रूप से यीशु जो कह रहे हैं, मेरा व्यक्तित्व और शिक्षण ही सच्चा इरादा और लक्ष्य है पुराने नियम का कानून. उस यीशु में, जिसमें कानून किसी बड़ी चीज़ की ओर इशारा कर रहा था, अब जब यीशु आ गए हैं, तो उनकी शिक्षा और उनका मंत्रालय, उनका जीवन, उनका व्यक्तित्व अब कानून को उसकी पूर्ति में लाता हुआ देखा जा सकता है। तो फिर, ईसाई होने के नाते, जब हम पुराने नियम के कानून को देखते हैं, तो हम न केवल यह सवाल पूछते हैं कि कानून का असली इरादा क्या प्रतीत होता है, बल्कि जब हम नया नियम पढ़ते हैं, तो मसीह कानून को कैसे पूरा करते प्रतीत होते हैं ? बस, और क्या, ताकि पुराने नियम का कानून पूरी तरह से ईसाइयों पर लागू हो, लेकिन केवल इस लेंस के माध्यम से देखा जाए कि यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में कैसे पूरा हुआ है।

आपको फिर से कुछ बहुत ही त्वरित उदाहरण देने के लिए, नंबर एक है, उदाहरण के लिए, पुराने नियम की बलि प्रणाली, प्रसाद और जानवरों की बलि, लैविकस में उल्लिखित पाप बलि, आदि। इन्हें इस रूप में देखा जा सकता है पूर्ण, या बलिदान प्रणाली, हमें इसका पालन करते हुए और यीशु मसीह पर भरोसा करके इसका पालन करते हुए देखा जा सकता है, जो अब एक बार के लिए अंतिम बलिदान है जिसे पूरा किया गया है। इसलिए पुराने नियम में बलिदान प्रणाली यीशु मसीह में पूरी होती है, एक बार के बलिदान के लिए, और हम अपने उद्धार और अपने पाप के लिए यीशु मसीह के बलिदान पर भरोसा करके पुराने नियम के कानून का पालन करना और पालन करना और पूरा करना जारी रखते हैं।

एक और उदाहरण, बहुत जल्दी, थोड़ा अधिक विवादास्पद है क्योंकि यह सीधे दस आज्ञाओं से आता है, एक तथाकथित डिकालॉग, और वह सब्त का आदेश है, जहां इज़राइल को सातवें दिन का पालन करने के लिए सब्त का पालन करने के लिए बुलाया गया था, सब्बाथ, और विभिन्न शर्तें जो इसके आसपास बढ़ीं कि इज़राइल यह कैसे करेगा, और यहां तक कि ऐसा करने में विफलता के लिए कुछ दंड भी। हालाँकि, फिर यह प्रश्न पूछना दिलचस्प है कि फिर आज परमेश्वर के लोग सब्त का पालन कैसे करते हैं? क्या हम ऐसा शनिवार या सातवें दिन को मानकर, या किसी अन्य

दिन को मानकर करते हैं? क्या रविवार अब ईसाई सब्बाथ है? क्या सब्त के दिन को रविवार में स्थानांतरित कर दिया गया है ताकि अब हमें रविवार के साथ उसी तरह व्यवहार करना चाहिए जैसे इज़राइल ने सब्त के दिन के साथ किया था? या, मुझे लगता है कि जब आप इब्रानियों अध्याय 3 और 4 को एक बार फिर से पढ़ते हैं, तो मुझे लगता है कि लेखक स्पष्ट है कि हम एक बार फिर से यीशु मसीह में आराम करके और अपने उद्धार के लिए यीशु मसीह पर भरोसा करके सब्बाथ को पूरा करते हैं, न कि एक विशिष्ट अलग दिन रखकर . मुझे लगता है कि हम आमतौर पर सब्बाथ मनाने के बजाय, मेरी राय में, रविवार को अलग-अलग कारणों से पूजा करने के लिए इकट्ठा होते हैं।

अब, इसका मतलब यह नहीं है कि कुछ लोग अभी भी आराम के दिनों या अवधियों का पालन नहीं करना चाहते हैं, और निश्चित रूप से यह अभी भी अच्छी सलाह है, लेकिन जब मैं इब्रानियों 3 और 4 को पढ़ता हूं, तो मुझे मुख्य रूप से सच्चा इरादा, या पालन करने का आदेश मिलता है। सब्बाथ, मुख्य रूप से यीशु मसीह के व्यक्तित्व और उनके द्वारा लाए गए नई वाचा के उद्धार में पूरा होता है, ताकि हम अब मुख्य रूप से मसीह पर भरोसा करके सब्त का पालन करें। अब, हम अभी भी तीसरे नंबर पर सवाल पूछ सकते हैं कि इस कानून का असली इरादा क्या है? और यह हमें आराम की अवधियों का पालन करने और आराम की अवधियों को अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रेरित कर सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि नया नियम स्पष्ट है कि मुख्य रूप से ईसाई सब्बाथ को इस दृष्टि से देखते हैं कि इसे कैसे पूरा किया गया है यीशु मसीह का व्यक्तित्व. कानून के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, और यह मेरे द्वारा बताए गए कुछ बिंदुओं की तुलना में बहुत अधिक शामिल है, लेकिन उम्मीद है कि मैंने कम से कम पुराने नियम के कानूनी साहित्य पर विचार करने और प्रदान करने के लिए आपकी भूख बढ़ा दी है। आज इसे पढ़ने, इसे लागू करने और इसकी व्याख्या करने के लिए कुछ दिशानिर्देश।

पुराने नियम में अंतिम साहित्यिक शैली जिस पर मैं संक्षेप में बात करना चाहता हूं वह भविष्यसूचक साहित्य है, जो फिर से पुराने नियम में काफी बड़ी सामग्री का निर्माण करता है, और भविष्यवाणी करने वाले साहित्य के प्रकार के संबंध में शुरुआत में कुछ टिप्पणियां करनी होंगी। है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि कम से कम हमारी आधुनिक दुनिया में, अधिकांश लोग,

न केवल ईसाई और न केवल ईसाई, बल्कि ईसाई मंडलियों के बाहर और हमारे चर्चों के बाहर भी, दुनिया में लोग अक्सर भविष्यवाणी को भाग्य बताने या हस्तरेखा पढ़ने या पढ़ने से जोड़ते हैं। ऐसा कुछ। इसलिए भविष्यवाणी मुख्य रूप से केवल भविष्य बता रही है या भविष्य में घटनाओं की भविष्यवाणी या भविष्यवाणी कर रही है, आमतौर पर भविष्य के प्रति हमारे आकर्षण के जवाब में या यह जानने की इच्छा के जवाब में कि भविष्य में किसी समय मेरे साथ क्या होने वाला है।

अक्सर आपने इसे विशेष रूप से ग्रीको-रोमन धर्मों में पाया है, अर्थात्, कोई व्यक्ति अक्सर विभिन्न प्रश्नों के साथ दैवज्ञ नामक स्थान पर जाता है, और वे उन प्रश्नों पर देवताओं से परामर्श करते हैं, अक्सर एक पुजारी या दुभाषिया के माध्यम से, और वह पुजारी या दुभाषिया फिर एक दैवज्ञ वापस भेजता या एक भविष्यवाणी बताता जिसमें सवालों के जवाब होते, जैसे, अगर मैं युद्ध में जाता हूं, तो क्या मैं जीतूंगा? या मुझे यह या वह करना चाहिए? क्या मुझे इस व्यक्ति से शादी करनी चाहिए? कोई इसे देवताओं के पास लाएगा और भगवान उत्तर के साथ जवाब देंगे। इसलिए हम अक्सर पुराने नियम और बाइबिल की भविष्यवाणी को भविष्य बताने वाली भविष्यवाणी के रूप में सोचते हैं, जिसमें क्रिस्टल बॉल में यह देखना होता है कि आने वाले वर्षों, महीनों या वर्षों या यहां तक कि सदियों में क्या होने वाला है। हालाँकि यह समझना महत्वपूर्ण है कि कम से कम पुराने नियम में, भविष्यवाणी में, जैसा कि पुराने नियम के एक विद्वान ने वर्णन किया है, एक भविष्यवक्ता वह था जिसे उसने वाचा लागू करने वाला कहा था।

वह, जब इसराइल अपने दायित्वों से भटकना शुरू कर दिया, और उदाहरण के लिए, मूर्तिपूजा और मूर्तिपूजा प्रथाओं में लापरवाही करना शुरू कर दिया, तो भगवान ने अक्सर इज़राइल को अपने वाचा के दायित्वों की याद दिलाने और उन्हें खतरों के बारे में चेतावनी देने या यहां तक कि संवाद करने के लिए एक भविष्यवक्ता को खड़ा किया। वह सज़ा जो अब वाचा के दायित्वों को निभाने में उनकी विफलता के कारण होगी। इसलिए भविष्यवक्ता केवल उस व्यक्ति की जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए हवा से नहीं उठते हैं जो यह जानना चाहता है कि भविष्य में क्या होने वाला है, बल्कि इसके बजाय पुराने नियम के भविष्यवक्ता वाचा लागू करने वाले थे या जिन्हें भगवान ने इज़राइल को संबोधित करने के लिए खड़ा किया था। उन्हें उनकी वाचा के दायित्वों

की याद दिलाएं और उन्हें मूर्तिपूजा में शामिल होने के खतरों के बारे में चेतावनी दें या यहां तक कि जब उन्होंने ऐसा किया हो तो उन पर फैसला सुनाएं, साथ ही अन्य बुतपरस्त राष्ट्रों को भी संबोधित करें और उन पर फैसला सुनाएं। इससे एक बहुत ही लोकप्रिय और आम अंतर पैदा हो गया है जो आपको कई व्याख्यात्मक या व्याख्यात्मक पाठ्यपुस्तकों में मिलेगा, आगे-कथन और पूर्व-कथन के बीच का अंतर, जो कि एक संदेश को संप्रेषित करना है, एक संदेश को आगे-बताना है। पाठकों के लिए पूर्व-कथन के विपरीत, इसका अर्थ भविष्य में होने वाली किसी चीज़ की भविष्यवाणी करना है।

पुराने नियम की भविष्यवाणी को आम तौर पर दोनों को समाहित करने वाला माना जाता है, लेकिन पूर्व पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है, यानी भविष्यवक्ता मुख्य रूप से पाठकों को संदेश देने के लिए होते हैं, भले ही वे भविष्य के बारे में पहले से ही बताते हों, यह एक तरह से प्रासंगिक और संबोधित करने वाला है। वह स्थिति जिसमें पाठक खुद को पाते हैं। सामान्य तौर पर भविष्यवाणी के भीतर, केवल आपको तथ्य से अवगत कराने के लिए, लेकिन फिर से सबसे अच्छी बात जो आप कर सकते हैं वह अन्य कार्यों को पढ़ना है जो भविष्यवाणी साहित्य से संबंधित हैं और यह क्या है और यह कैसे कार्य करता है और कैसे इसे पढ़ने के लिए, लेकिन एक बात जो आप भविष्यवाणी ग्रंथों में पाएंगे वह यह है कि आप अक्सर भविष्यवाणी पाठ में विभिन्न अन्य रूपों का उपयोग पाएंगे। हम उनमें से एक के बारे में पहले ही बात कर चुके हैं, आलोचना के रूप में कॉल आख्यान, एक साहित्यिक रूप जो पैगंबर के संदेश को वैध बनाने की आवश्यकता से उत्पन्न हुआ लगता है और जो कुछ भी वह कहने जा रहा है उसे वैध बनाने के लिए उसका आह्वान करता है, और अक्सर वह यह पैगम्बर के साथ ईश्वर के टकराव और एक आदेश के रूप में था, जिसके बाद पैगम्बर द्वारा आपत्ति की गई, जिसके बाद ईश्वर की प्रतिक्रिया हुई और फिर आमतौर पर एक वादा और एक संकेत भी हुआ।

ये सभी भविष्यवाणी कॉल कथा के सामान्य तत्व हैं। ऐसे अन्य प्रकार के रूप हैं जो आपको मिलते हैं जो एक सामान्य रूप, एक शैलीबद्ध रूप प्रतीत होते हैं, आप भविष्यवाणी साहित्य में पाते हैं जैसे कि जिसे अक्सर शोक दैवज्ञ कहा जाता है, एक पाठ जो किसी के लिए शोक शुरू करता है और फिर कभी-कभी दुःख का कारण बताता है . आमतौर पर शोक दैवज्ञों को कभी-कभी

अंत्येष्टि शोक या अंत्येष्टि विलाप से विकसित होते हुए देखा जाता है, लेकिन पुराने नियम के पाठ में उनका उपयोग उस फैसले पर शोक व्यक्त करने के लिए किया जाता है जो अब इज़राइल या राष्ट्रों पर उनके पापों के कारण आ रहा है।

इसलिए आप अक्सर किसी के लिए शोक या शोक पाते हैं और फिर उसका कारण बताते हैं जिसे अक्सर शोक दैवज्ञ के रूप में जाना जाता है। या दूसरा सामान्य रूप वह है जिसे कभी-कभी संदेशवाहक भाषण कहा जाता है जहां आपको कुछ ऐसा मिलता है जैसे प्रभु का वचन अमुक के पास आया था, ऐसा प्रभु कहते हैं। आप पाएंगे कि भविष्यवाणी साहित्य के माध्यम से आम तौर पर दिखाई देने वाला यह रूप शायद फिर से भविष्यवक्ता के संदेश को वैध बनाने के लिए काम कर रहा है ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि इसे दैवीय मंजूरी प्राप्त है।

और अंत में एक रूप जो वास्तव में डैनियल जैसे सर्वनाश प्रकार के साहित्य में विकसित होता है उसे एक दृष्टि रिपोर्ट के रूप में जाना जाता है जो एक भविष्यवक्ता के दूरदर्शी अनुभव को रिकॉर्ड करता है चाहे वह एक सपने के माध्यम से या किसी अन्य प्रकार के परमानंद दूरदर्शी अनुभव के माध्यम से हो। आमतौर पर आपको किसी दर्शन की तैयारी जैसे उपवास, यहां तक कि दर्शन की स्थापना का भी संदर्भ मिलता है। कभी-कभी दृष्टि का एक सामान्य परिदृश्य नदी के किनारे खड़ा होना होता है।

आप पाते हैं कि इसके बाद दूरदर्शी अनुभव का लेखा-जोखा होता है और उसके बाद उस व्यक्ति ने क्या देखा, इसका लेखा-जोखा होता है। तो मेरा कहना यह है कि आप भविष्यसूचक साहित्य के भीतर भी काम कर रहे हैं, आपको विभिन्न प्रकार के रूप मिलते हैं जो भविष्यसूचक पाठ को बनाते हैं। मैं जिस बारे में संक्षेप में बात करना चाहता हूं वह यह है कि मैं जो सोचता हूं उसके आधार पर भविष्यसूचक पाठ के सिद्धांतों को संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहता हूं, मुझे लगता है कि यह किस प्रकार का साहित्य है।

सबसे पहले एक बहुत ही महत्वपूर्ण बुनियादी व्याख्यात्मक सिद्धांत यह पहचानना है कि भविष्यसूचक साहित्य मुख्य रूप से भविष्यसूचक नहीं है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि ऐसा

इसलिए नहीं है क्योंकि यह है, बल्कि यह मुख्य रूप से वर्तमान के लिए एक संदेश है। यह मुख्य रूप से पैगंबर का उनके समकालीनों को निर्देशित एक संदेश है।

फिर कहा कि कठिनाई यह है कि भविष्यवक्ता आम तौर पर तब उठते हैं जब इज़राइल संकट में होता है जब वे मूर्तिपूजा में चले जाते हैं या अपने अनुबंध के दायित्वों से मुक्त होते हैं। पैगंबर को अक्सर एक संदेश संप्रेषित करने के लिए खड़ा किया जाता है जो मुख्य रूप से पश्चाताप और आज्ञाकारिता का आह्वान होता है। तो हम उस पर लौटेंगे लेकिन भविष्यवक्ता का संदेश मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी करने के लिए भविष्य की भविष्यवाणी करने के लिए नहीं है, बल्कि अंततः लोगों को आज्ञाकारिता और पश्चाताप और आज्ञाकारिता के लिए वापस बुलाने में से एक है।

किसी भी अन्य पाठ की तरह दूसरा, हालांकि मैं हमेशा विशेष रूप से कई ईसाइयों के साथ उत्सुक रहता हूँ कि कितनी बार इस सिद्धांत को नजरअंदाज कर दिया जाता है, हालांकि वे इसे बाइबिल में अन्य प्रकार के साहित्य पर लागू करने में प्रसन्न होते हैं, लेकिन किसी भी अन्य पाठ की तरह भविष्यवाणी पाठ को अंततः सबसे पहले समझा जाना चाहिए यह सब उस मूल ऐतिहासिक संदर्भ के आलोक में जिसमें इसे निर्मित किया गया था। फिर इसका मतलब यह है कि भविष्यसूचक पाठ को 21वीं सदी की घटनाओं या पहले या बाद की घटनाओं की भविष्यवाणी के रूप में पढ़ना शायद नाजायज है, लेकिन जब भविष्यवक्ता भविष्य की भविष्यवाणी करता है तब भी इसे इस प्रकाश में समझा जाना चाहिए कि पाठकों ने इसका क्या अर्थ समझा होगा। पहली सदी या उससे पहले का ऐतिहासिक संदर्भ। तीसरा यह समझना है कि अक्सर भविष्यसूचक भविष्यसूचक साहित्य रूपक भाषा और प्रतीकवाद का उपयोग करता है जिसे पाठक समझ गए होंगे।

उदाहरण के लिए, जब हम इस बारे में सोचते हैं कि पुराने नियम की भविष्यवाणी कैसे पूरी होती है या पूरी होगी तो अक्सर इसका उत्तर शाब्दिक रूप से नहीं होता है, लेकिन भविष्यवक्ता के भविष्यसूचक ग्रंथ, विशेष रूप से वे जो भविष्य की पूर्ति की आशा करते हैं या भविष्य की पूर्ति का उल्लेख करते हैं, अक्सर वे रूपक प्रतीकात्मक भाषा में समाहित होते हैं जिसका अर्थ है जबकि

भविष्यवक्ता वास्तव में वास्तविक व्यक्तियों और घटनाओं में ईश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति की आशा कर रहे हैं, यह प्रतीकात्मक रूप से और रूपक प्रकार की भाषा में संचार करता है ताकि हम इसका मतलब यह है कि हमें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि हम जो सोच सकते हैं उसमें भविष्यवाणी पाठ पूरा हो जाएगा। कुछ सख्त सीधे शाब्दिक तरीके के रूप में। मेरा पालन-पोषण एक चर्च के संदर्भ में हुआ था और जब हम रहस्योद्घाटन और डैनियल के बारे में बात करते हैं तो मैं उसी सिद्धांत पर लौटूंगा, लेकिन मेरा पालन-पोषण एक चर्च के संदर्भ में हुआ था जिसमें कहा गया था कि किसी को भविष्यवाणी की शाब्दिक व्याख्या करनी चाहिए जब तक कि ऐसा न करने का कोई अच्छा कारण न हो। मेरा मानना है कि इसे बिल्कुल उल्टा कर देना चाहिए और यह कहना चाहिए कि उस भविष्यसूचक भाषा, रूपक प्रतीकात्मक भाषा की प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या की जानी चाहिए जब तक कि ऐसा न करने का कोई अच्छा कारण न हो।

फिर इसका मतलब यह है कि मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूं कि भविष्यवक्ता ऐतिहासिक रूप से वास्तविक व्यक्तियों और घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं कर रहे थे, लेकिन अक्सर जब वे उनका वर्णन करते हैं तो वे प्रतीकात्मक भाषा में प्रतीकात्मकता के साथ ऐसा करते हैं और इसलिए हमें पूछने की ज़रूरत है कि हमें समझने और पूछने की ज़रूरत है कि क्या उस भाषा का अर्थ यह है कि लेखक क्या संप्रेषित करना चाहता था, वह रूपक भाषा क्या है जो यह बताती है कि लेखक घटना को कैसे देखता है और कैसे समझता है, इसलिए शाब्दिक रूप से नहीं बल्कि प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या की जा रही है। चौथा सिद्धांत यह समझना है कि भविष्यसूचक साहित्य वर्तमान और भविष्य दोनों को संदर्भित करता है। वास्तव में भविष्यवक्ता आप अक्सर देखेंगे कि कभी-कभी भविष्यवक्ता साहित्य उन घटनाओं का वर्णन करता प्रतीत होता है जो पाठक के दिन में घटित हो रही होंगी या बहुत जल्द ही क्षितिज पर घटित होंगी, लेकिन फिर बिना किसी चेतावनी के ऐसा लगता है जैसे लेखक भी है अचानक ऐसी भाषा का उपयोग करना जो इतिहास के अंतिम अंत, इतिहास के गूढ़ अंत का वर्णन करती है।

अक्सर ऐसा होता है जिसे आप घटित होते हुए पाते हैं, कभी-कभी भविष्यवक्ता घटनाओं का वैसे ही वर्णन करते हैं जैसे वे घटित होती हैं, लेकिन वे इसका वर्णन संपूर्ण विश्व के लिए ईश्वर के व्यापक उद्देश्यों की पृष्ठभूमि में करते हैं और इसलिए कभी-कभी भविष्यवाणी पाठ की व्याख्या

करना यह समझने में थोड़ा मुश्किल हो सकता है कि लेखक ने कब किया है भविष्यवक्ता से आगे बढ़कर अपनी स्थितियों में अपने स्वयं के क्षितिज से आगे बढ़कर संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए ईश्वर के उद्देश्यों के लिए ईश्वर के दृष्टिकोण को अपनाते के लिए आगे बढ़ा। पाँचवाँ और मैं बस इसका उल्लेख करूँगा और हम इसे अगले सत्र में उठाएँगे। भविष्यवाणी पाठ की व्याख्या करने में पाँचवाँ महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि यह प्रश्न पूछा जाए कि यह भविष्यवाणी कैसे पूरी होती है, विशेष रूप से कुछ प्रश्न पूछने के लिए। नंबर एक यह पूछना है कि क्या यह पुराने नियम की अवधि में पूरा होता है, क्या यह इज़राइल के इतिहास की अवधि में पूरा होता है या क्या यह ईसा मसीह के आगमन के साथ नए नियम में पूरा होता है या उससे भी आगे की भविष्यवाणी पूरी होती है? अंततः भविष्य में दुनिया के बिल्कुल अंत में और भगवान पूरे ब्रह्मांड के साथ व्यवहार करेंगे।

इसलिए कभी-कभी यह पूछना महत्वपूर्ण होता है कि भविष्यवाणी कैसे पूरी होती है, क्या यह भविष्य में पूरी होती है लेखक और उसके पाठकों का उनके जीवनकाल में दिन और आयु क्या यह इज़राइल के इतिहास में कभी पूरा होता है या क्या यह नए नियम में मुख्य रूप से ईसा मसीह और उनके लोगों के माध्यम से पूरा होता है या यह इतिहास के अंत के लिए एक भविष्यवाणी है ब्रह्मांड का. यह प्रश्न पूछने से संबंधित अन्य मुद्दे भी हैं कि यह भविष्यवाणी कैसे पूरी होती है और अगले सत्र में हम उस पर गौर करेंगे और पूर्ति के कुछ अन्य उदाहरण देंगे और फिर भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए कुछ और सिद्धांतों का उल्लेख करेंगे। पाठ और फिर हम नए नियम की ओर बढ़ेंगे और नए नियम की शैलियों और साहित्यिक प्रकारों पर विचार करेंगे और यह विशेष रूप से सुसमाचार से शुरू होने वाली व्याख्या को कैसे प्रभावित करता है और हम उन पर बहुत अधिक समय नहीं खर्च करेंगे क्योंकि हम पहले ही निपट चुके हैं गॉस्पेल और कथात्मक आलोचना के साथ, लेकिन मैं साहित्य के प्रकार के आलोक में गॉस्पेल को हम कैसे पढ़ते हैं, इस पर कुछ और अवलोकन करके नए नियम की शैलियों को देखना शुरू करना चाहता हूँ।